गन्ना कृषक माह मार्च में क्या करें!

1– पूर्वी व मध्य क्षेत्र में बसन्तकालीन गन्ने की बुवाई प्रत्येक दशा में मार्च के अन्त तक समाप्त कर लेनी चाहिये।

2– पूर्वी व मध्य क्षेत्र में जमाव उपरान्त तुरन्त हल्की सिंचाई (बुवाई के 30–35 दिन बाद) करें तथा ओट आने पर गुड़ाई करें।

3– शरद्कालीन गन्ने के साथ अन्तः फसल यदि खड़ी हो तो आवश्यकतानुसार, विशेषकर गेहूँ में हल्की सिंचाई करें।

4– शरद्कालीन गन्ने में यदि फरवरी माह में यूरिया की टॉप ड्रेसिंग न की गयी हो तो मार्च में सिंचाईकरें तथा 132 कि0ग्रा0/हे0 यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करें।

5– फसल की परिपक्वता के आधार पर बावग गन्ने की कटाई करें। जिस खेत में पेड़ी फसल लेनी हो उसकी कटाई इस माह में अवश्य करें। बावग गन्ने की कटाई उपरान्त खेत में मेंड़ गिराने के उपरान्त ठूँठों की छँटाई, पंक्तियों के दोनों तरफ गुड़ाई, 200 कि0ग्रा0 यूरिया/हे0 का पंक्ति के दोनों तरफ प्रयोग एवं भूमि में मिलाना तथा रिक्त स्थानों की भराई करें।

6– शरद्कालीन बावग गन्ने में यदि चोटीबेधक/अंकुरबेधक से ग्रसित पौधा हो तो उसे भूमि की सतह से काटकर निकाल देना चाहिये। इससे उसकी अगली पीढ़ी का आपतन कम हो जायेगा।

7– पूर्वी उ0प्र0 में तापक्रम अधिक हो जाता है। अतः इस माह से ही हल्की सिंचाई प्रत्येक 20–25 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार करते रहना चाहिये।

8– खरपतवार नियंत्रण हेतु कस्सी/फावड़े से गुड़ाई करना श्रेयस्कर है। अतः प्रत्येक सिंचाई के उपरान्त मार्च–जून तक फावड़े या कल्टीवेटर से गुड़ाई करनी चाहिये। श्रमिक समस्या होने पर पहली सिंचाई उपरान्त गुड़ाई करके गन्ने की सूखी पत्तियॉ बिछानी चाहिये। यदि इसे भी करना सम्भव न हो तो गन्ना बुवाई के 7–10 दिन के मध्य पेन्डीमिथेलीन खरपतवार नाशी रसायन की 3.3 ली0 दवा को 1150 ली0 पानी में घोलकर समान रूप से छिड़काव करना चाहिये।

9– एजोटोबैक्टर या एजोस्पाइरिलम 5 कि0ग्रा0/हे0 की दर से प्रथम सिंचाई के उपरान्त पौधों के पास करना चाहिये।

10– पी0एस0बी0 5 कि0ग्रा0/हे0 की दर से प्रथम सिंचाई के उपरान्त डालें।

ट्रेन्च विधि से हुयी बुवाई । उपज बढ़ी घर लक्ष्मी आई ।।